रजिस्ट्री सं. डीएल(एन)-04/0007/2003--05 REGISTERED No. DL(N)-04/0007/2003—05

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

साप्ताहिक/WEEKLY

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 36] नई दिल्ली, शनिवार, सितम्बर 4—सितम्बर 10, 2004 (भाद्रपद 13, 1926)
No. 36] NEW DELHI, SATURDAY, SEPTEMBER 4—SEPTEMBER 10, 2004 (BHADRA 13, 1926)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।
(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय-सूची

भाग I--खण्ड-1--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों तथा संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं 727

भाग I--खण्ड-2--(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 985

भाग I--खण्ड-3--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 5

भाग I--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं 1253

भाग II--खण्ड-1--अधिनियम, अध्यादेश और विनियम *

भाग II--खण्ड-1क--अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ *

भाग II--खण्ड-2--विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट *

भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (i)--भारत सरकार के मंत्रालयों [illegible] प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं) *

भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (ii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं *

भाग II--खण्ड-3--उप खण्ड (iii)--भारत सरकार के मंत्रालयों (जिसमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं) *

भाग II--खण्ड-4--रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश *

भाग III--खण्ड-1--उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार से सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं 867

भाग III--खण्ड-2--पेटेंट कार्यालय द्वारा जारी की गई पेटेन्टों और डिजाइनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं और नोटिस 6821

भाग III--खण्ड 3--[illegible] अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं *

भाग III--खण्ड-4--विधिक अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं 3825

भाग IV--गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा जारी किए गए विज्ञापन और नोटिस 255

भाग V--अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दर्शाने वाला सम्पूरक *

CONTENTS

PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 727

PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court 985

PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence . 5

PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence 1253

PART II—SECTION 1—Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 1A—Authoritative texts in Hindi languages of Acts, Ordinances and Regulations . . . . . *

PART II—SECTION 2—Bills and Rsports of the Select Committee on Bills . . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules including Orders, Bye-laws, etc. of general character issued by the Ministry of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) . . . . . *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) *

PART II—SECTION 3—SUB-SECTION (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts, published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than Administration of Union Territories) . . . . . *

PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence . *

PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India 867

PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs 6821

PART III—SECTION 3—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners . . . . . *

PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies 3825

PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies 255

PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi . . . . . *

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

[(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं]

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 15 अगस्त 2004

सं. 107-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए तटरक्षक पदक प्रदान करते है।

कमांडेंट काशी नाथ गुप्ता (5003-एस)

कमांडेंट पल्लन डेविस एन्टोनी (4011-पी)

कमांडेंट के नीतीश कृष्णामूर्ति (0078-सी)

खुर्शीद अहमद, प्रधान नाविक (एम ई), (01391-क्यू)

2. यह पदक तटरक्षक पदक प्रदान करने संबंधी नियमावली के नियम 11(ii) के अन्तर्गत दिया जा रहा है।

अरुण मिश्रा
निदेशक

सं. 108-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी बहादुरी के लिए तटरक्षक पदक प्रदान करते है।

कमांडेंट कृष्णामूर्ति मुरलीधरन (0214-एल)

उप कमांडेंट राजेन्द्र कृष्ण कदम (0411-जे)

नरेन्द्र कुमार डाबर, अधिकारी (ए पी) (0784-एस)

जोगिन्द्र सिंह, प्रधान नाविक (ए एल), (01265-जैड)

2. यह पदक तटरक्षक पदक प्रदान करने संबंधी नियमावली के नियम 11(ii) के अन्तर्गत दिया जाता है साथ ही उनको अप्रैल 2004 से नियम 13 (क) के अधीन स्वीकार्य विशेष भत्ता भी देय होगा। सेवा के विवरण की प्रतिलिपि संलग्न है।

अरुण मिश्रा
निदेशक

प्रशस्ति उल्लेख

1. कमांडेंट के मुरलीधरण(0214-एल) ने 30 जुलाई 1988 को तटरक्षक सेवा आरंभ की । उन्हें जून 1992 में विंग प्रदान किये गये । अफसर ने अपनी दिलेरी साबित की तथा इसके लिए उन्हें 1500 घंटे की दुर्घटना रहित उड़ान के लिए सुरक्षा पुरस्कार स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया । एन सी सी मौरिसियस में वरिष्ठ पायलट की हैसियत से उन्होंने अगस्त, 1999 से मार्च, 2003 तक अपना कार्यकाल पूरा किया । इस अफसर की अनुकरणीय सेवा को मौरिसियस सरकार द्वारा सराहा गया जिसके लिए उन्हें प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया ।

2. 13 अप्रैल 2004 को एम वी जेनियस स्टार-VI जोकि कलकत्ता के दक्षिण में 220 समुद्री मील की दूरी पर 30 डिग्री तक एक ओर भयंकर स्थिति में झुक गया था, से "हमें बचाओं" का संदेश प्राप्त हुआ । कमांडेंट के मुरलीधरण को खोज एवं बचाव अभियान के लिए तुरन्त एक वायुयान भेजने का आदेश दिया गया । अफसर ने उड़ान योजना तैयार की, खोज योजना तैयार की तथा अन्य दूसरी प्रशासनिक आवश्यकताएं न्यूनतम समय में तैयार की और सूचना प्राप्त होने के एक घंटे के भीतर उड़ान भर दी ।

3. चूंकि, सुपर मेरिक रडार चालू स्थिति में नहीं था तथा वायुयान में केवल हस्तचालित जी पी एस उपलब्ध था वो भी विरामी था, अफसर ने नौचालक को मार्गदर्शन दिया तथा नियोजित खोज वायुयान को एकाग्र स्थिति में रखकर अपने अनुभव से कार्य निष्पादित किया । अफसर की प्रभावी योजना से खोज शुरू करने के 30 मिनट के भीतर ही जीवितों के साथ संकटग्रस्त पोत की दो जीवनरक्षी नौकाओं तथा एक जीवन रक्षी घाटी को ढूंढ लिया गया । अफसर ने सी एच-16 एम एम बी चैनल पर नजदीकी सभी वाणिज्यिक पोतों से संपर्क बनाया तथा उन्हें जीवितों को उठाने के लिए दुर्घटना क्षेत्र की ओर आगे बढ़ने का निदेश दिया ।

4. एक पोत एम वी तोंघई जोकि जीवितों से 18 समुद्री मील की दूरी पर था जीवितों की ओर भेजा गया । एम वी जीलियन तथा एम वी लोकमहेश्वरी को भी कार्रवाई क्षेत्र में भेजा गया । उफानी समुद्री स्थितियों, भारी उफान, 1000 फीट तक बादल आच्छादित तथा मात्र 3 - 4 समुद्री मील की दृश्यता के साथ डोरनियर विमान के लिए बिना नुकसान उठाये सभी संपर्क स्थापित करना एक

कठिन कार्य था । अफसर को वायुयान का कैप्टन होने के नाते यह सुनिश्चित करना था कि 8 जीवितों को एम वी तोंघई द्वारा उठा लिया गया है । एम वी जिलियम ने शाम को उस क्षेत्र में एक और जीवन रक्षी नौका को देखा तथा डोरनियर वायुयान द्वारा निर्देश मिलने पर चार और जीवितों को पोत पर उठाया ।

5. दूसरे दिन प्रातःकाल खोज के दो घण्टों के भीतर वायुयान ने अपनी आखरी उड़ान में दृश्य पर उपलब्ध कमांडर तटरक्षक पोत वराह को जीवितों की वास्तविक स्थिति के नजदीक बचाव के लिए निर्देश दिये । इस प्रकार तटरक्षक पोत वराह ने समुद्री में तैर रहे दो और जीवितों को पोत पर उठा लिया । तथा डोरनियर वायुयान ने दोपहर की उड़ान में एक और जीवित को ढूंढ लिया, उसे भी अंततः तटरक्षक पोत पर उठा लिया गया । अफसर की असुलनीय व्यावसायिक क्षमता, ड्यूटी के प्रति अनुकरणीय समर्पण, दृढनिश्चय तथा मानवीय हमदर्दी से खोज एवं बचाव अभियान पूरा किया गया, जिसमें 17 में से 15 व्यक्तियों को प्रथम सूचना के 30 मिनट के भीतर ही बचा लिया गया ।

6. कमांडेंट के मुरलीधरण का सक्षम नियोजन, अकेले उपलब्ध डोरनियर वायुयान को समय पर उड़ान भरवाना तथा संपूर्ण अभियान को अधिकतम व्यावसायिक तरीके से निष्पादित करना, अफसर के व्यावसायिक ज्ञान तथा नेतृत्व गुणों के उच्च आदर्शों को दर्शाता है । इस प्रकार कमांडेंट के मुरलीधरण (0214-एल) को तटरक्षक पदक(बहादुरी) प्रदान करने के लिए कड़ी सिफारिश की जाती है ।

प्रशस्ति उल्लेख

1. उपकमांडेंट आर के कदम(0411-जे) ने 07 जनवरी 1995 को तटरक्षक में सेवा आरंभ की । इस समय यह अफसर मई, 2003 से तटरक्षक पोत राजकिरण में नियुक्त है ।

2. 10 मार्च 2004 को लगभग 1830 बजे तटरक्षक पोत राजकिरण के हल को मैसर्स अलंगामैरीन शिपयार्ड लिमिटेड गोधा भावनगर में बंदरगाह से बाहर निकलने के दौरान पानी में नुकसान पहुँचा । पानी के नीचे नुकसान होने से रसद कक्ष में पानी भरने लगा तथा पोत 1.9 मीटर से 2.6 मीटर तक आगे की ओर असंतुलित हो गया । अधिक पानी का भराव पोत को अस्थिर कर सकता था तथा जीवन एवं संपत्ति को नुकसान पहुंचा सकता था । अफसर ने तुरन्त ही आने वाले खतरे का मूल्यांकन कर लिया, क्योंकि रसद कक्ष की कील से जल का स्तर 10 फुट तक पहुंच गया तथा पानी वार्डरूम कमान अफसर केबिन तथा कार्यकारी अफसर के केबिन में दो फिट तक भर गया । रसद भंडार जिसे की वार्डरूम से लकड़ी के आधे दरवाजे से अलग कर लिया गया था पानी की पहुंच में था । यह काफी मुश्किल था कि कक्ष के अन्दर घुसकर देखा जाय तथा दस फुट की गहराई में छेद को बंद किया जाए । उपकमांडेंट आर के कदम(0411-जे) नुकसान नियंत्रण दल का सदस्य होने के नाते छोटे दरवाजे से रसद कक्ष में अंदर जाने को तैयार हुआ ताकि क्षतिग्रस्त क्षेत्र/छेद का मूल्यांकन किया जा सके ।

3. उन्होंने बिना गोताखोरी उपकरण/गियर के सास रोककर ही कई बार कक्ष के भीतर गोता लगाया । पानी का तेज दबाव छेद के मूल्यांकन में बाधा खड़ी कर रहा था । प्रतिकूल स्थितियों के बावजूद भी अफसर के समर्पित प्रयासों से अंततः पानी के भीतर क्षतिग्रस्त स्थान को ढूंढ लिया गया तथा छेद को बंद कर दिया गया जिससे पानी का भारी दबाव कम हो गया तथा पोत को संभावित नुकसान से बचा लिया गया ।

4. अफसर द्वारा इस पूरे अभियान के दौरान अपनी जान की परवाह किए बगैर तटरक्षक सेवा की उच्च परंपराओं तथा आदर्श वाक्य "हम रक्षा करते हैं" का सम्मान करते हुए सम्मुथान शक्ति तथा नेतृत्व के गुणों प्रदर्शन किया गया । उपकमांडेंट आर के कदम(0411-जे) के द्वारा बहादुरी के प्रयास तथा समर्पित सेवा के लिए अफसर को तटरक्षक पदक (बहादुरी) प्रदान करने की सिफारिश की जाती है ।

प्रशस्ति उल्लेख

1 एन के डाबर, अधिकारी (ए पी) (00784- एम) ने 03 जून 1986 को तटरक्षक सेवा शुरू की तथा 12 जून 1992 को उन्हें वायुकर्मी गोताखोर के तौर पर शामिल किया गया । तटरक्षक में उनके 18 वर्षों की सेवा के दौरान अधीनस्थ अफसर को विभिन्न महत्वपूर्ण नियुक्तियों पर तैनात किया गया । अधीनस्थ अफसर को 28 अक्तूबर 2003 को वायुकर्मी विशेषज्ञ की निर्धारित समय अवधि पूरी होने पर मूल काडर को प्रत्यावर्तित किया गया । इस समय एन के डाबर क्षेत्रीय गोताखोरी प्रकोष्ठ, क्षेत्रीय मुख्यालय (अंडमान व निकोबार) में सलग्नता के आधार पर तैनात हैं ।

2. अधीनस्थ अफसर, संकट पूर्ण स्थितियों में कार्य करते समय सदैव ही विशिष्ट बुद्धि कौशल, कुशाग्रता, बुद्धिमानी एवं संसाधन युक्त तरीके से प्रदर्शन करता आ रहा है । उसके पिछले एक वर्ष के वायुकर्मी गोताखोर के कार्यकाल में जब हेलिकाप्टर अवैध मत्स्य शिकार के विरुद्ध चलाये गये आपरेशन में कार्यरत था, एन के डाबर ने अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूहों के उत्तरी क्षेत्र के लैण्डफाल द्वीप में छिपी दो म्यांमारी डोंगियों को खोजने तथा पोर्टब्लेयर के पास असहाय बह रहे पांच मछुवारों की प्राण रक्षा में सहायता की ।

3. 14 अप्रैल 2004 को लगभग 0230 बजे क्षेत्रीय मुख्यालय(अंडमान व निकोबार) के गोताखोरी प्रकोष्ठ को कैम्पबेल-बे में तैनात तटरक्षक पोत भीखाजीकामा से पोत में पानी भरने के बारे में संकट संदेश प्राप्त हुआ । संदेश मिलने के एक घण्टे के भीतर एन के डाबर को गोताखोरी आपरेशन के लिए वायुयान से ले जाया गया । डाबर तथा उसका सहायक गोताखोर सीधे ही कार्रवाई पर जुट गये तथा उसी दिन 0800 बजे तक गोताखोरी आपरेशन शुरू कर दिया गया । डाबर ने अपने चातुर्य से पोत के कील से छः इंच ऊपर छेद को ढूंढ लिया । पोत में पानी तीव्रता से घुस रहा था तथा छेद को और चौड़ा कर रहा था । डाबर ने पुटीन तैयार की तथा छेद को बंद कर दिया उसके द्वारा किए गये भागीरथ प्रयत्नों से 35 मिनट के बाद पानी का घुसना कम हो गया । पोत की पोर्टब्लेयर के लिए सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए उसने पुनः गोता लगाया और कील के दूसरे भागों की जांच की जिसमें उसे कील के दूसरी ओर दूसरी दरार नजर आई । इस प्रक्रिया को पुनः दोहराया गया तथा अंततः दोपहर तक पूरे तले की छानबीन की गई जिसमें देखा गया कि पुटीन ठीक तरह से लगी हैं तथा पानी का अंदर घुसना बंद हो चुका है । इस संपूर्ण गोताखोरी आपरेशन में लगभग चार घण्टे

का समय लगा। इस सतत गोताखोरी आपरेशन से अंततः संभावित अनर्थ होने से टल गया और पोत इस स्थिति में हो गया है कि उसे खींचकर सुरक्षित पोर्टब्लेयर लाया जा सके। इस अभियान की सफलता, कार्मिक का साहस, पहल, कार्यकुशलता तथा व्यावसायिकता को प्रदर्शित करती है।

4. अधीनस्थ अफसर द्वारा अपने जीवन की परवाह न करते हुए प्रदर्शित अनुकरणीय साहस तटरक्षक की उच्चतम परंपराओं के अनुरूप वास्तविक व्यावसायिक स्वीकारोक्ति है। इस साहसिक कार्य के लिए एन के डाबर, अधिकारी (ए पी) (0078 4 एम) को तटरक्षक पदक (बहादुरी) प्रदान करने के लिए कड़ी सिफारिश की जाती है।

प्रशस्ति उल्लेख

1. जोगेन्द्र सिंह, प्रधान नाविक(ए एल) पोत गोताखोर (01265 -जेड) ने 28 अप्रैल 1987 को तटरक्षक सेवा आरंभ की । वे 26 नवम्बर 1989 से वायु वैद्युत पर्यवेक्षक की मूल ड्यूटियों के अलावा अपनी ड्यूटियों को पोत(गोताखोर) के तौर पर अनुकरणीय ढंग से पूरा कर रहे थे । इस समय यह नाविक 745 स्क्वाड्रन (त.र.) पोर्टब्लेयर में कार्यरत है ।

2. जोगेन्द्र सिंह का समर्पित भावना से किया गया कार्य 31 दिसम्बर 2003 को तटरक्षक के लिए प्रतिष्ठा लाया । जब वह सीजी-804 के साथ बचाव अभियान में तैनात था । उसे एक छोटी जेमिनि से नीचे उतारा गया और उन्होनें समुद्र में पोत अलीथिया, फ्रेंच नौका जोकि पर्यटन के लिए आई थी, के डूब रहे रोगी के प्राण बचाये । इस श्रमशील तथा गहरे गोताखोर ने इस चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा किया, क्योंकि उसके बाद ड्यूटी के प्रति निष्ठा तथा अतुलनीय साहस भरा हुआ था जिसे उसने अपने जीवन की परवाह किये बिना प्रदर्शित किया ।

3. जोगेन्द्र सिंह, प्रधान नाविक(ए पी) , एन के डाबर के साथ सहायक गोताखोर था, जिन्होंने तटरक्षक पोत भीखाजीकामा के तले में आई दरार को ठीक किया । जोगेन्द्र सिंह और उसका साथी सूचना मिलते ही पोत पर पहुंच गये । उसके सहायक को जब पानी के घुसने के स्थान की पहचान हो गई तब, जोगेन्द्र सिंह पुटीन लगाने के लिए तैयार हुआ क्योंकि मिनट-मिनट में पानी अन्दर घुस रहा था, छेद बड़ा हो रहा था तथा स्थिति बद से बदतर हो रही थी । दांत किरकिराते हुए जे सिंह ने 35 मिनट तक पानी में गोता लगाया तथा सफलतापूर्वक पुटीन लगाई जिसे तुरन्त ही पोत में पानी घुसना बंद हो गया । उसने पुटीन की दूसरी परत लगाने के लिए पुनः गोता लगाया । जोगेन्द्र सिंह का अंतकरण तथा ड्यूटी की भावना उसे पोत के कील के चारों ओर देखने के लिए मजबूर कर रही थी और इसके परिणामस्वरूप कील के ऊपर तीन इंच की दारार को ढूंढने में सफल हुए । पोत को सुरक्षित पोर्टब्लेयर लाने के लिए दुबारा नीचे गया ताकि कील के दूसरे भागों की जांच की जा सके और कील के दूसरी तरफ उसे दूसरी दरार नजर आई । इस प्रकिया को पुनः पूरा किया गया और अंततः दोपहर तक पोत के पूरे तले की जांच की गई जिससे पता चला कि पुटीन ठीक तरह से लगी हुई हैं और वहां कोई पानी अब अन्दर नहीं घुस रहा है । इस पूरे गोताखोरी आपरेशन में चार घण्टे का समय लगा । साहसिक गोताखारी आपरेशन द्वारा अंततः संभावित अनर्थ टल गया तथा पोत को

सुरक्षित खींच कर पोर्टब्लेयर ले जाने योग्य किया गया । इस अभियान की सफलता कार्मिक का साहस, पहल, कुशलता तथा व्यावसायिकता का प्रतिफल है ।

4. अभियान को सफलतापूर्वक पूरा करने में जोगेन्द्र सिंह प्रधान नाविक ने एक बार पुनः व्यावसायिक कुशाग्रता, ड्यूटी के प्रति समर्पण तथा अतुलनीय साहस का परिचय दिया । सेवा के प्रति नाविक के साहसिक कृत्य के लिए उसे तटरक्षक पदक (बहादुरी) प्रदान करने की कड़ी सिफारिश की जाती है ।

सं. 109-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

श्री बी.के. हम्पागोल
चीफ फायर आफिसर
कर्नाटक

श्री एन. सेयद सुलथान
फायरमेन – ड्राइवर –4150
तमिलनाडु

श्री राजपाल सिंह त्यागी
चीफ फायर आफिसर
उत्तर प्रदेश

श्री बाबू राम पाल
लीडिंग फायरमेन
उत्तर प्रदेश

श्री मोहम्मद सलीम
लीडिंग फायरमेन
उत्तर प्रदेश

श्री बी.एम. सेन
डायरेक्टर
पश्चिम बंगाल

श्री डी.के. बोस
डिविजनल आफिसर
पश्चिम बंगाल

श्री पी.के. दत्त
स्टेशन आफिसर
पश्चिम बंगाल

श्री जी.एन. खान
असिस्टेंट डायरेक्टर
गृह मंत्रालय

श्री एच.एन. भरणे
सीनियर डेमोन्स्ट्रेटर
गृह मंत्रालय

2. ये पुरस्कार अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने को संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(ii) के तहत प्रदान किए जाते हैं।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं. 110-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

श्री के.एस.आर. राधाकृष्णा
असिस्टेंट डिविजनल फायर आफिसर
आन्ध्र प्रदेश

श्री जी. सितारामूलू
लीडिंग फायरमेन
आन्ध्र प्रदेश

श्री मो. खाजा
ड्राईवर ऑपरेटर
आन्ध्र प्रदेश

श्री डी.के. सैकिया
स्टेशन आफिसर
असम

श्री एस. सोनोवाल
लीडिंग फायरमेन
असम

श्री आर.जे. भट्ट
डिविजनल फायर आफिसर
गुजरात

श्री पी.एस. परमार
एस.टी.ओ.
गुजरात

श्री एस.एम. शेख
फायरमेन
गुजरात

श्री आर.पी. राजपूत
फायरमेन
गुजरात

श्री जे.टी. अहारी
जमादार
गुजरात

श्री डी.टी. गढवी
जमादार
गुजरात

श्री के. शिव कुमार
डिस्ट्रिक्ट फायर आफिसर
कर्नाटक

श्री पी. गोविन्दास्वामी
फायर स्टेशन आफिसर (ट्रेनिंग)
कर्नाटक

श्री यू. शिवाशरण
असिस्टेंट फायर स्टेशन आफिसर
कर्नाटक

श्री सिद्दालिंगा राजू
फायरमेन ड्राइवर–713
कर्नाटक

श्री पूवाप्पा एस.
फायरमेन–227
कर्नाटक

श्री टी. मुस्तफा
स्टेशन आफिसर
केरल

श्री बी.एस. खोमद्राम
फायरमेन
मणिपुर

श्री चिंलेन सिंह चिंगांबम
फायरमेन
मणिपुर

श्री रूमाइ कुमा
स्टेशन आफिसर
मेघालय

श्री एम.बी. कार्कि
ड्राइवर
मेघालय

श्री बी.सी. बसुमतारी
फायरमेन
मेघालय

श्री के.सी. कानुनगो
डिप्टी फायर आफिसर
उड़ीसा

श्री एन.के. सिंह
असिस्टेंट स्टेशन आफिसर
उड़ीसा

श्री त्रिलोचन पात्र
असिस्टेंट स्टेशन आफिसर
उड़ीसा

श्री उपेन्द्र नाथ मल्लिक
हवलदार मेजर
उड़ीसा

श्री एस.के. बेहरा
फायरमेन–680
उड़ीसा

श्री बी. पन्नुस्वामी
स्टेशन आफिसर
पांडिचेरी

श्री वी.आर. कालीअपेरूमल
स्टेशन आफिसर
पांडिचेरी

श्री धन बहादुर छेत्री
असिस्टेंट डायरेक्टर
सिक्किम

श्री प्रकाश राई
फायर स्टेशन आफिसर
सिक्किम

श्री पी.टी. भोटिया
लीडिंग फायरमेन
सिक्किम

श्री के. भक्तवत्सलम
डिविजनल आफिसर
तमिलनाडु

श्री डी.एन.वी. नायर
असिस्टेंट डिविजनल आफिसर
तमिलनाडु

श्री एस.जे. ज्ञानसुन्दरम
स्टेशन आफिसर
तमिलनाडु

श्री एस. कलीयपेरूमल
एफ.डी.आर.–2788
तमिलनाडु

श्री पी. मनोहरन
फायरमेन–2965
तमिलनाडु

श्री मकबूल हुसेन
चीफ फायर आफिसर
उत्तर प्रदेश

श्री वी.पी. पाण्डे
फायर स्टेशन आफिसर
उत्तर प्रदेश

श्री राम सिंह
ड्राइवर
उत्तर प्रदेश

श्री तपन कुमार बासू
डिविजनल फायर आफिसर
पश्चिम बंगाल

श्री आर.सी. चकबर्ती
मोबिलाइज़िंग आफिसर
पश्चिम बंगाल

श्री एन.एम. खान
सब–आफिसर
पश्चिम बंगाल

श्री आर.पी. मुखर्जी
लीडर 167
पश्चिम बंगाल

2. ये पुरस्कार अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने को संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(ii) के तहत प्रदान किए जाते हैं।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं. 111-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी विशिष्ट सेवा के लिए राष्ट्रपति का होमगार्ड और नागरिक सुरक्षा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

श्री मो0 आकमल हुसेन
कमांडेन्ट
असम

श्री बलवान सिंह
जे0 एस0 ओ0 (सी0डी0)
दिल्ली

श्रीमति रेशमा राम रिसबूड
सहायक उपनियंत्रक
महाराष्ट्र

श्री एन0 के0 प्रधान
डिविजनल वार्डेन
राजस्थान

श्री भंवर सिंह शेखावत
सब इन्सट्रक्टर
एन0सी0डी0सी0, नागपुर

2. ये पदक राष्ट्रपति का होमगार्ड और नागरिक सुरक्षा पदक प्रदान करने हेतु विनियमित नियमों के नियम 3(ii) के अन्तर्गत प्रदान किए जाते हैं।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं. 112-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारियों को उनकी सराहनीय सेवा के लिए होमगार्ड और नागरिक सुरक्षा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

श्री के0 के0 शर्मा
सुबेदार
असम

श्री गोविन्द माली
प्लाटून कमांडर
असम

श्री एल0 एस0 रावत,
डिविजनल वार्डेन
दिल्ली

श्री बी0 डी0 डोगरा
डिविजनल वार्डन
दिल्ली

श्री ए0 के0 मलिक
डिविजनल वार्डेन
दिल्ली

श्री के0 पी0 शर्मा
डिविजनल वार्डेन
दिल्ली

श्री आर0 पी0 सोलंकी
डिप्टी डिविजनल वार्डेन
दिल्ली

कुमारी एस0 वी0 ठक्कर
डिविजनल कमाण्डर
गुजरात

श्री पी0 बी0 सालुंके
स्टाफ ऑफिसर
गुजरात

श्री जे0 वी0 पटेल
डिविजनल कमाण्डर
गुजरात

श्री के0 एन0 बारीया
डिविजनल कमाण्डर
गुजरात

श्री बी0 सी0 ठाकोर
कम्पनी कमाण्डर
गुजरात

श्री एच0 एस0 ठाकर
प्लाटून कमाण्डर
गुजरात

श्री नरसन्न
कमांडेन्ट
कर्नाटक

श्री एन0 एन0 पाटील
इन्सट्रक्टर
कर्नाटक

श्री कृष्णा
ए0 एस0 आई0 बेतार
कर्नाटक

श्री वि0 बि0 होसूर
कम्पनी कमाण्डर
कर्नाटक

श्री एच0 बी0 आर0 गौड
प्लाटून कमाण्डर
कर्नाटक

श्री एस0 आर0 बाबू
कम्पनी कमाण्डर
कर्नाटक

श्री बी0 एल0 गवली
स्टाफ ऑफिसर
महाराष्ट्र

श्री बी0 डी0 अढांगले
सहायक उप नियंत्रक
महाराष्ट्र

श्री नारायण बलराम पगारे
चीफ वार्डेन
महाराष्ट्र

श्री एस0 डी0 पाटील
इन्सटक्टर
महाराष्ट्र

श्री एस0 आर0 लुगडे
इन्सटक्टर और सर्वेक्षण अधिकारी
महाराष्ट्र

श्री एस0 पण्डा
सी0 डी0 वालन्टियर
उडीसा

श्री ए0 एन0 कोलुथुन्गन
प्लाटून कमाण्डर
तमिलनाडू

श्री एम0 गोपालन
प्लाटून कमाण्डर
तमिलनाडू

श्री पी0 पी0 जे0 आर0 सिंह
प्लाटून कमाण्डर
तमिलनाडू

श्री जी0 के0 सेथुरमन
प्लाटून कमाण्डर
तमिलनाडू

श्री बी0 एस0 धानिक
जूनियर क्लर्क
उत्तरांचल

श्री एस0 पी0 गौतम
कम्पनी कमाण्डर
छत्तीसगढ

श्री एम0 पी0 यादव
प्लाटून कमाण्डर
छत्तीसगढ

श्री एन0 के0 भोई
प्लाटून कमाण्डर
छत्तीसगढ

श्री आर0 एन0 तिवारी
इन्सपेक्टर (एम)
छत्तीसगढ

श्री वाई0 कालू
हवलदार इन्सट्रक्टर
छत्तीसगढ

श्री ए0 पी0 मिश्रा
कन्सटेबल
छत्तीसगढ

श्री आर0 एस0 चौधरी
सहायक निदेशक (रेस्क्यु)
एन0 सी0 डी0 सी0 नागपुर

श्री ए0 के0 बावने
गेस्टेटनर ओपरेटर
नागपुर

2. ये पदक होमगार्ड और नागरिक सुरक्षा पदक प्रदान करने हेतु विनियमित नियमों के नियम 3(ii) के अन्तर्गत प्रदान किए जाते हैं।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं. 113-प्रेज/2004--राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस, 2004 के अवसर पर निम्नलिखित जेल कार्मिकों को सराहनीय सेवा के लिए सुधारात्मक सेवा पदक प्रदान करते हैं :--

श्री जी0 तमरैसेल्वन
उप जेलर
केन्द्रीय जल, मदुरै
तमिलनाडु

श्री पी0 राधाकृष्णन
सहायक जेलर
उप जेल तिरु[illegible]मल्लई
तमिलनाडु

श्री एम0 रामासामी
सहायक जेलर
केन्द्रीय जेल, त्रिचि
तमिलनाडु

श्री एम0के0 मुनुसामी
ग्रेड I वार्डर
केन्द्रीय जेल, वेल्लोर
तमिलनाडु

श्रीमती सी0 रानी
ग्रेड I वार्डर
एस0पी0डब्ल्यू0, वेल्लोर
तमिलनाडु

श्री जे0 गुणशेखरन
ग्रेड II वार्डर
केन्द्रीय जेल, कोयम्बतूर
तमिलनाडु

श्री प्रभु दयाल वर्मा
उप महानिरीक्षक, रायपुर
छत्तीसगढ़

श्री जवाहर [illegible] पाण्डेय
सहायक [illegible]
केन्द्रीय जेल, अम्बिकापुर
छत्तीसगढ़

श्री धर्म देव सिंह
हैड वार्डर
केन्द्रीय जेल, बिलासुपर
छत्तीसगढ़

श्री दीपक कुमार तम्बोली
वार्डर
केन्द्रीय जेल, रायपुर
छत्तीसगढ़

श्री पी0 नरसिम्हा रेड्डी
अपर जेल महानिरीक्षक
महानिदेशक एवं जेल महानिरीक्षक का कार्यालय, हैदराबाद
आंध्र प्रदेश

श्री कृष्ण प्रकाश श्रीवास्तव
जेलर
छतरपुर
मध्य प्रदेश

श्री मृत्युंजय सिंह बघेल
जेलर
केन्द्रीय जेल, रीवा
मध्य प्रदेश

श्री राधा रमण श्रीवास्तव
उप जेलर
रीवा
मध्य प्रदेश

श्री कृष्ण दत्त पाण्डेय
जेल वार्डर
जिला जेल, आजमगढ़
उत्तर प्रदेश

2. ये पुरस्कार सराहनीय सेवा के लिए सुधारात्मक सेवा पदक प्रदान करने को शासित करने वाले नियमों के नियम 4(iii) के अंतर्गत प्रदान किए जाते हैं।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 114–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलि. त अधिकारी को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री गुलाम अहमद भट्ट
निदेशक
जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 28.8.2003, समय रात्रि 22:55 बजे श्रीनगर के एक चार मंजिले ग्रीनवे होटल पर फिदाइन द्वारा आकमण किया गया । जिस कारण जान व माल की काफी हानि हुई । सूचना मिलते ही बिना समय गंवाए श्री गुलाम अहमद भट्ट, निदेशक जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचकर आग पर काबू पाते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अधिकारी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, गोलीबारी के बीच बन्धकों और अन्य फसें लोगों को प्रभावित भवन से सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामत: तारीख 28.08.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 115–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री राजिन्द्र कुमार हक,
उप–निदेशक,
जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 28.8.2003, समय रात्रि 22:55 बजे श्रीनगर के एक चार मंज़िले ग्रीनवे होटल पर फिदाइन द्वारा आक्रमण किया गया । जिस कारण जान व माल की काफी हानि हुई । सूचना मिलते ही बिना समय गंवाए श्री राजिन्द्र कुमार हक, उप–निदेशक, जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचकर आग पर काबू पाते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अधिकारी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, गोलीबारी के बीच बन्धकों और अन्य फसें लोगों को प्रभावित भवन से सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(घ) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामत: तारीख 28.08.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 116–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री लतीफ अहमद खान,
उप–निदेशक,
जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस

<u>सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :</u>

दिनांक 20.12.2002 समय 11:44 बजे आतंकवादियों द्वारा श्रीनगर में टाटू ग्राउन्ड, बाटमालू में एक आरमी कैम्प पर हमला किया । बिना समय गवाए श्री लतीफ अहमद खान, उप–निदेशक जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचे । उन्हों देखा बैरक से आग की लपटें काफी मात्र बाहर निकल रही हैं । अधिकारी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, गोलीबारी के बीच आग बुझाने और बचाव कार्य करने का साहस किया।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 20.12.2002 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 117–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री अब्दुल गनी वानी,
स्टेशन आफिसर,
जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस

<u>सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :</u>

दिनांक 28.8.2003, समय रात्रि 22:55 बजे श्रीनगर कें एक चार मंजिले ग्रीनवे होटल पर फिदाइन द्वारा आकमण किया गया । जिस कारण जान व माल का काफी नुकसान हुआ । सूचना मिलते ही बिना समय गवाए श्री अब्दुल गनी वानी, स्टेशन आफिसर, जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचकर आग पर काबू पाते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अधिकारी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, गोलीबारी के बीच बन्धकों और अन्य फसें लोगों को प्रभावित भवन से सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 28.08.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 118--प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए राष्ट्रपति का अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :--

श्री मुहम्मद रफीक खान,
सब--आफिसर,
जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 28.8.2003, समय रात्रि 22:55 बजे श्रीनगर के एक चार मंजिले ग्रीनवे होटल पर फिदाइन द्वारा आकमण किया गया । जिस कारण जान व माल की काफी हानि हुई । सूचना मिलते ही बिना समय गवाए श्री मुहम्मद रफीक खान, सब--आफिसर, जम्मू और कश्मीर फायर सर्विस अपनी टीम के साथ घटना स्थल पर पहुंचकर आग पर काबू पाते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अधिकारी ने अपनी जान की परवाह न करते हुए, गोलीबारी के बीच बन्धकों और अन्य फसें लोगों को प्रभावित भवन से सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, नेतृत्व, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 28.08.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 119–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री राजन कृष्णन कुदम कांडी (मरणोपरांत)
ड्राईवर मेकेनिक,
केरल फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 11.5.2002 समय 16:00 बजे जिला ओरकेट्री, कोजीकोड में खुदाई करते समय एक कुंआ धंस गया और उसकी मिट्टी में चार लोग दब गये । बिना समय गंवाए श्री राजन कृष्णन कुदम कांडी, ड्राईवर मेकेनिक केरल फायर सर्विस अपने साथियों के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और आवश्यक सावधानी बरतते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अचानक ही कुआं फिर धंस गया और उसमें श्री राजन तथा उसके दो अन्य साथी भी मिट्टी में दब गये । इस प्रकार श्री राजन ने ड्यूटी करते हुए अपनी जान न्योच्छावर कर दी ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 11.05.2002 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 120–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री अजीत कुमार भास्कर पिल्ले (मरणोपरांत)
फायरमैन– 4956,
केरल फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 11.5.2002 समय 16:00 बजे जिला ओरकेट्री, कोजीकोड में खुदाई करते समय एक कुंआ धंस गया और उसकी मिट्टी में चार लोग दब गये । बिना समय गंवाएं श्री अजीत कुमार भास्कर पिल्लाई, फायरमैन, केरल फायर सर्विस अपने साथियों के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और आवश्यक सावधानी बरतते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अचानक ही कुआं फिर धंस गया और उसमें श्री अजीत कुमार तथा उसके दो अन्य साथी भी मिट्टी में दब गये । इस प्रकार श्री कुमार ने ड्यूटी करते हुए अपनी जान न्योच्छावर कर दी ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(घ) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 11.05.2002 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 121–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री जाफर अब्दुलकुट्टी मुल्लुथुरूथी (मरणोपरांत)
फायरमैन– 4714,
केरल फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 11.5.2002 समय 16:00 बजे जिला ओरकेट्री, कोज़ीकोड में खुदाई करते समय एक कुंआ धंस गया और उसकी मिट्टी में चार लोग दब गये । बिना समय गंवाएं श्री जाफर अब्दुलकुट्टी मुल्लुथुरूथी,फायरमैन, केरल फायर सर्विस अपने साथियों के साथ घटना स्थल पर पहुंचे और आवश्यक सावधानी बरतते हुए बचाव कार्य शुरू कर दिया । अचानक ही कुआं फिर धंस गया और उसमें श्री जाफर तथा उसके दो अन्य साथी भी मिट्टी में दब गये । इस प्रकार श्री जाफर ने ड्यूटी करते हुए अपनी जान न्योच्छावर कर दी ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 11.05.2002 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 122–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर प नेम्नालेखित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री ध्वज जगत,
लीडींग फायरमैन,
उड़ीसा फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 08.11.2003 को सुबह के 5:45 बजे श्री जयप्रकाश सिंह जो कि पवित्र स्नान करते हुए वेद व्यास घाट पर ब्राम्हणी नदी में डूब गया । घाट पर सेवा पर सतर्क श्री ध्वज जगत, लीडींग फायर मैन, उड़ीसा फायर सर्विस बचाव–बचाव की आवाज सुन कर भागा और नदी में कूद गया और कठिन प्रयास के बाद श्री जयप्रकाश को बचा लिया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 08.11.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 123–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री पर्शु राम बारिक,
फायरमैन –1244
उड़ीसा फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 6.11.2003 प्रातः 9.00 बजे भूदान नगर, पैन्थाकोटा, पुरी में तीन आदमी सोक पिट में फंस गये । घटना स्थल पर पहुंचने पर विदित हुआ कि तीन आदमी एक–एक करके पिट में घुसे और जहरीली गैस के कारण बेहोश हो गये । श्री पर्शु राम बारिक, फायरमैन, उड़ीसा फायर सर्विस भली भांति जानते हुए भी कि उसका साथी पहले ही बचाव कार्य में जहरीली गैस से प्रभावित हो चुका है, फिर भी पिट के अन्दर कठिनाई से घुसा और श्री प्रफुल्ल कुमार दास को सुरक्षित बाहर निकाला ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 06.11.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

सं0 124–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री पूर्ण चन्द्र महापात्र,
फायरमैन –1627,
उड़ीसा फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 6.11.2003 प्रातः 9.00 बजे भूदान नगर, पैन्थाकोटा, पुरी में तीन आदमी सोक पिट में फंस गये । घटना स्थल पर पहुंचने पर विदित हुआ कि तीन आदमी एक–एक करके पिट में घुसे और जहरीली गैस के कारण बेहोश हो गये । श्री पूर्ण चन्द्र महापात्र, फायरमैन, उड़ीसा फायर सर्विस ने श्वसन यंत्र पहनकर पिट के भीतर घुसने का प्रयास किया परन्तु सोक पिट का मुंह तंग होने के कारण अन्दर नहीं घुस सका । उसने अपना श्वसन यंत्र उतारा तथा बड़ी कठिनाई से तंग रास्ते से प्रवेश किया और पदमचरण सुबुधि को पिट से सुरक्षित बाहर निकाल लिया । बावजूद इसके वह जहरीली गैस से पहले ही प्रभावित हो चुका है, दोबारा उसने अन्दर जाने की हिम्मत जुटाई और हालु मुदुली को सुरक्षित बाहर निकालने में कामयाब हो गया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 06.11.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

(बरुण मित्रा)
निदेशक

सं0 125–प्रेज/2004 राष्ट्रपति स्वतंत्रता दिवस 2004 के अवसर पर निम्नलिखित अधिकारी को वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक सहर्ष प्रदान करते हैं :–

श्री भास्कर चन्द्र बारिक,
फायरमैन – 447
उड़ीसा फायर सर्विस

सेवा का विवरण जिसके लिए एवार्ड दिया गया :

दिनांक 29.4.2003 को दिन के 12:30 बजे वारीपाडा में श्रीमति विध्यूवति यादव कुएं में गिर गई । बिना समय गंवाए श्री भास्कर चन्द्र बारिक, फायरमैन, उड़ीसा फायर सर्विस अपने साथियों के साथ घटना स्थल पर पहुंचा और देखा कि श्रीमति यादव करीब 50 फीट गहरे कुएं में गिरी हुई है। श्री बारिक ने तुरन्त रस्से की बनावटी सीढ़ी की सहायता से कुएं में प्रवेश किया । जब वह श्रीमति यादव के नजदीक पहुंचा तो उसने देखा कि पानी का स्तर उस महिला के नाक के करीब था और अपनी जान बचाने का पूर्ण प्रयास कर रही थी । अपनी जान की परवाह न करते हुए श्री बारिक ने उस महिला को अपने कन्धे पर उठा कर सुरक्षित बाहर निकाल लिया ।

2. इस प्रकार, उन्होंने उत्कृष्ट वीरता, अनुकरणीय साहस, व्यावसायिक विशेषज्ञता और कर्त्तव्य के प्रति उच्च कोटि की निष्ठा का प्रदर्शन किया ।

3. यह पुरस्कार वीरता के लिए अग्निशमन सेवा पदक प्रदान करने संबंधी संचालित करने वाले नियमों के नियम 3(प) के तहत प्रदान किया जाता है तथा परिणामतः तारीख 29.04.2003 से नियम 5(क) के तहत अनुमेय विशेष भत्ता इसके साथ देय है ।

बरुण मित्रा
निदेशक

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 15th August 2004

No. 107-Pres/2004 - The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2004 to award the Tatrakshak Medal for Meritorious Service to the undermentioned officers:-

Comdt Kashi Nath Gupta (5003-S)

Comdt Pallan Davis Antony (4011-P)

Comdt NK Krishnamoorthi (0078-C)

Khurshid Ahmed, P/Nvk(ME) (01391-Q)

2. This award is made under Rule 11(ii) of the rules governing grant of Tatrakshak Medal for Meritorious Service.

Barun Mitra
Director

No. 108-Pres/2004 - The President is pleased on the occasion of the Independence Day, 2004 to award the Tatrakshak Medal for Gallantry to the undermentioned officers:-

Comdt Krishnamoorthi Muralidharan (0214-L)

Dy Comdt Rajendra Krishna Kadam (0411-J)

Narender Kumar Dabar, Adh (AP) (0784-M)

Jogender Singh, P/Nvk(AL) (01265-Z),

2. This award is under Rule 11(i) of the Rules governing the award of Tatrakshak Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under Rule 13(a) in respect of above mentioned officers with effect from April 2004. Citation in respect of the above officers are enclosed.

Barun Mitra
Director

CITATION

1. Comdt K Muralidharan (0214-L) joined the Coast Guard on 30 Jul 1988. He was awarded flying wings in Jun 1992. The officer proved his mettle and earned the coveted Safety Award Insignia for 1500 hrs of accident/incident free flying. During his tenure with the NCC Mauritius as a Senior Pilot from Aug 1999 to Mar 2003, the officer's dedicated and exemplary service was well recognized by the Government of Mauritius, who honoured him with a commendation certificate.

2. On 13 Apr 2004, an SOS call was received from MV Genius Star VI, which was dangerously listing to one side, by 30 degrees, 220 NM south of Kolkatta. Comdt K Muralidharan was ordered to launch an aircraft immediately for Search and Rescue (SAR) mission. The officer prepared flight planning, search planning and made other administrative requirements ready within the shortest possible time and took off within an hour of intimation.

3. Since the Super Marec radar was not operational and the only handheld Global Positioning System (GPS) available in the aircraft was also intermittent, the officer guided the navigator with his experience for executing the meticulously planned search with Dead Reckoning (DR) fixing of the aircraft. The effective planning resulted in sighting of two lifeboats and one life raft of the distressed vessel within 30 minutes of the commencement of search, with survivors. The officer contacted all merchant vessels in the nearby vicinity on MMB Channel 16 and directed them to start heading towards the scene of action to pick up the survivors.

4. A vessel MV Tonghai, which was 18 NM away from the survivors, was vectored to the position of the survivors. MV Gilian and MV Lok Maheshwari, were also vectored to the survivors. With the rough sea conditions, heavy swell, cloud base 1000 ft and visibility just 3-4 NM, it was a challenging task for the Dornier to keep all the contacts visual without loosing. The officer, as Captain of the aircraft ensured that MV Tonghai picked up all eight survivors found in the

survivor's craft. In the evening, MV Gilian had sighted one more lifeboat in the area allocated by the Dornier and picked up four more survivors.

5. Within two hours of search on the next day early morning, on the latest aircraft's input to the On Scene Commander, the Coast Guard Ship Varaha, had put all the rescue units in a very close proximity to the actual position of the survivors. Thus CGS Varaha picked up two more survivors floating in the water and the Dornier could locate one more survivor in the noon sortie, who was also finally picked up by CGS Varaha. By virtue of his unparalleled professional competence, exemplary dedication, steely determination and human approach, the officer accomplished the SAR mission, wherein 15 lives out of 17 were saved within 30 hours from the first launch.

6. Comdt K Muralidharan was instrumental in precise planning, timely launching of only available Dornier and execution of the whole mission in an utmost professional manner which speaks very high of the officer's professional knowledge and his leadership qualities. Thus Comdt K Muralidharan (0214-L) is strongly recommended for the award of **Tatrakshak Medal (Gallantry)**.

CITATION

1. Comdt(JG) RK Kadam (0411-J) joined the CG service on 07 Jan 1995. The officer is presently appointed onboard CGS Rajkiran since May 2003.

2. On 10th Mar 2004, at around 1830 hours, CGS Rajkiran sustained underwater hull damage during undocking of the ship at M/s Alang Marine Shipyard Ltd. Gogha, Bhavnagar. The underwater damage resulted in flooding of the victualling compartment and the ship trimmed heavily forward with forward draught increasing to 2.6 mtrs from 1.9 mtrs. Any further ingress could have destabilized the vessel, endangering life and property onboard. The officer immediately assessed the imminent danger to the vessel as the water level reached 10 Ft from the keel of victualling compartment and water ingressed into wardroom, CO's cabin, EXO's cabin by 02 Ft. The victualling store, which is separated from wardroom by wooden deck, is accessible by a small hatch of size 1Ft x 1 Ft. It was a difficult task to go inside the compartment to assess and plug the hole under the depth of 10 Ft. Comdt(JG) RK Kadam, (0411-J), being part of damage control team, volunteered to go inside the victualling compartment through the small hatch to assess the damaged area/hole.

3. He dived several times inside the compartment without diving equipment/gears by holding breath. The strong pressure of water made difficult to assess the hole. Despite unfavorable conditions, the officer's dedicated efforts finally succeeded in locating the damaged underwater area and the hole was plugged, which restricted the heavy inflow of water and saved the ship from possible danger.

4. The resilience and leadership quality displayed by the officer without caring for his personal comfort during the entire operation is in keeping with the highest tradition of the Coast Guard and the service motto "We Protect". For the gallantry effort and service rendered by Comdt (JG) RK Kadam(0411-J), the officer is recommended for the award of **Tatraksak Medal(Gallantry).**

CITATION

1. NK Dabar, Adh(AP) (00784-M) joined the CG service on 03 Jun 1986 and was inducted as an aircrew diver on 12 Jan 1992. During his career of 18 years in the Coast Guard, the Subordinate Officer had been entrusted with various important appointments. The Subordinate Officer was reverted to his parent cadre on 28 Oct 2003 on termination of stipulated time period of aircrew specialization. Presently, Dabar is attached with the Regional Diving Cell, Regional Headquarters (A&N) at Port Blair.

2. The Subordinate Officer has been consistently displaying exceptional intelligence, ingenuity, rare presence of mind and resourcefulness while dealing with complex situations. In last one year of his tenure as Air Crew Diver(ACD) when Helo undertook antipoaching operations, Dabar was instrumental in locating two Burmese dinghies hidden in Landfall island, the northernmost island of A&N and saving five fishermen stranded off Port Blair.

3. On 14 Apr 2004, at around 0230 hrs, the diving cell of Regional Headquarters (A&N) received the message regarding flooding of CGS Bhikhaiji Cama at Campbell Bay. Within an hour, after the receipt of message, Dabar was airlifted to undertake the diving operation. Dabar alongwith fellow diver straightway got into action and commenced the diving operation by 0800 hrs same day. Dabar with his keen sense of observation identified and located the hole, just about six inches above the keel. Water was gushing in rapidly and making the hole wider. Dabar prepared the putty and plugged the hole. After about 35 minutes of herculean efforts by him, the flow of water was reduced. In order to ensure safe passage of the ship to Port Blair, he dived again to check other parts of keel and found another crack on the other side of the keel. The plugging process was repeated and finally by afternoon complete bottom search was carried out which revealed that the putty was holding and there was no further ingress of water. The total diving operation lasted for about four hours. The persistent diving operations finally avoided a possible catastrophe and made the ship capable of being safely towed back to Port Blair. The success of this

mission shows the courage, initiative, ingenuity and professionalism of the individual.

4. The exemplary courage with total disregard to personal safety displayed by the Subordinate Officer in a true professional way is in keeping with the high traditions of the Coast Guard service. In recognition there of, NK Dabar, Adh(AP) (00784-M) is strongly recommended for award of **Tatrakshak Medal (Gallantry).**

CITATION

1. Jogender Singh, P/Nvk(AL), a Ship Diver, (01265-Z) joined the CG service on 28 Apr 1987. He has been carrying out his duties in an exemplary manner as ship diver(SD) in addition to his primary duty of Air Electrical supervisor since 26 Nov 1989. Presently the sailor is borne with 745 Squadron (CG), at Port Blair.

2. J Singh's dedication to work brought glory to the Coast Guard on 31 Dec 2003, when he was part of rescue mission with CG Helicopter 804. He saved the life of a drowning patient on board sailing vessel Alithia, a French yacht which was on a pleasure trip. An assiduous and deft diver, he could accomplish this challenging task because of his devotion to duty and unmatched courage, which he displayed without caring for his own life.

3. J Singh was the fellow diver with NK Dabar, Adh(AP) who helped in arresting the under water crack of the Coast Guard Ship Bhikaiji Cama. J Singh and his buddy got into action as soon as they reached the ship. After his fellow diver identified the point of ingress, J Singh dived and applied putty to plug the hole when water was gushing in and widening the hole, making the situation worse. Gritting his teeth to the task, J Singh dived for thirty-five minutes and applied the putty successfully, which immediately stemmed the flow. J Singh's keen instinct and sense of duty took him around the keel to inspect the surrounding area and as a result of his alertness he was able to notice another

crack three inches above the keel. The whole process of arresting the underwater crack was repeated and finally by afternoon complete bottom search was carried out, which revealed that putty was holding and there was no further ingress of water. The total diving operation lasted for about four hours. The persistent diving operations finally avoided a possible catastrophe and made the ship capable of being safely towed back to Port Blair. The success of this mission shows the courage, initiative, ingenuity and professionalism of the individuals.

4. In accomplishing the mission successfully J Singh, P/Nvk has once again shown professional acumen, dedication, devotion to duty and unmatched courage. The sailor is strongly recommended for award of **Tatrakshak Medal(Gallantry)** in recognition of his approach viz, "service before self".

No. 109-Pres./2004—The President is pleased, on the occasion of the Independence Day, 2004 to award the President's Fire Service Medal for Distinguished Service to the undermentioned officers :—

SHRI B.K.HAMPPAGOL
CHIEF FIRE OFFICER
KARNATAKA.

SHRI N. SYED SULTHAN
FIREMAN-DRIVER-4150
TAMIL NADU.

SHRI RAJPAL SINGH TYAGI
CHIEF FIRE OFFICER
UTTAR PRADESH

SHRI BABU RAM PAL
LEADING FIREMAN
UTTAR PRADESH.

SHRI MOHAMMAD SALEEM
LEADING FIREMAN
UTTAR PRADESH.

SHRI B.M. SEN
DIRECTOR
WEST BENGAL.

SHRI D.K. BOSE
DIVISIONAL OFFICER
WEST BENGAL.

SHRI P.K. DUTTA
STATION OFFICER
WEST BENGAL.

SHRI G.N.KHAN
ASSTT. DIRECTOR
NFSC/MHA.

SHRI H.N. BHARNE
SENIOR DEMONSTRATOR
NFSC/MHA.

2. This award is made under rule 3(ii) of the rules governing the award of President's Fire Service Medals.

BARUN MITRA
Director

No. 110-Pres./2004—The President is pleased, on the occasion of the Independence Day, 2004 to award the Fire Service Medal for Meritorious Service to the undermentioned officers :—

SHRI K.S.R. RADHA KRISHNA
ASSTT.DIVISIONAL FIRE OFFICER
ANDHRA PRADESH.

SHRI G. SEETHARAMULU
LEADING FIREMAN
ANDHRA PRADESH

SHRI MOHD. KHAJA
DRIVER OPERATOR
ANDHRA PRADESH

SHRI D.K.SAIKIA
STATION OFFICER
ASSAM.

SHRI S. SONOWAL
LEADING FIREMAN
ASSAM.

SHRI R.J. BHATT
DIVISIONAL FIRE OFFICER
GUJARAT.

SHRI P.S. PARMAR
S.T.O.
GUJARAT.

SHRI S.M. SHAIKH
FIREMAN
GUJARAT.

SHRI R.P. RAJPUT
FIREMAN
GUJARAT.

SHRI J.T. AHARI
JAMADAR
GUJARAT.

SHRI D.T. GADHAVI
JAMADAR
GUJARAT.

SHRI K. SHIVA KUMAR
DISTT. FIRE OFFICER
KARNATAKA.

SHRI P. GOVINDASWAMY
FIRE STATION OFFICER(TRG.)
KARNATAKA

SHRI U. SHIVASHARANA
ASSTT. FIRE STATION OFFICER
KARNATAKA

SHRI SIDDALINGA RAJU
FIREMAN DRIVER-713
KARNATAKA

SHRI POOVAPPA S.
FIREMAN-227
KARNATAKA

SHRI T. MUSTHAFA
STATION OFFICER
KERALA.

SHRI B.S. KHOMDRAM
FIREMAN
MANIPUR.

SHRI CH. S. CHINGANGBAM
FIREMAN
MANIPUR.

SHRI RUMMAI KUMA
STATION OFFICER
MEGHALAYA.

SHRI M.B. KARKI
DRIVER
MEGHALAYA.

SHRI B.C. BASUMATARY
FIREMAN
MEGHALAYA.

SHRI K.C. KANUNGO
DY. FIRE OFFICER
ORISSA.

SHRI N.K.SINGH
ASSTT. STATION OFFICER
ORISSA.

SHRI T. PATRA
ASSTT. STATION OFFICER
ORISSA

SHRI U.N. MALLIK
HAV.MAJ.
ORISSA.

SHRI S.K. BEHERA
FIREMAN-680
ORISSA.

SHRI B. PONNUSAMY
STATION OFFICER
PONDICHERRY.

SHRI V.R. KALIAPERUMAL
STATION OFFICER
PONDICHERRY.

SHRI D.B. CHETTRI
ASSTT. DIRECTOR
SIKKIM.

SHRI PRAKASH RAI
FIRE STATION OFFICER
SIKKIM.

SHRI P.T. BHUTIA
LEADING FIREMAN
SIKKIM.

SHRI K. BAKTHAVATHSALAM
DIVISIONAL OFFICER
TAMIL NADU.

SHRI D.N. VELAYUDHAN NAIR
ASSTT. DIVISIONAL OFFICER
TAMIL NADU.

SHRI S. GNANASUNDARAM
STATION OFFICER
TAMIL NADU.

SHRI S. KALIAPERUMAL
F.DR-2788
TAMIL NADU.

SHRI P. MANOHARAN
FIREMAN-2965
TAMIL NADU.

SHRI MAQBOOL HUSAIN
CHIEF FIRE OFFICER
UTTAR PRADESH.

SHRI V.P. PANDEY
FIRE STATION OFFICER
UTTAR PRADESH.

SHRI RAM SINGH
DRIVER
UTTAR PRADESH.

SHRI T.K. BASU
DIVISIONAL FIRE OFFICER
WEST BENGAL.

SHRI R.C. CHAKRABORTY
MOBILISING OFFICER
WEST BENGAL.

SHRI N.M. KHAN
SUB OFFICER
WEST BENGAL.

SHRI R.P. MUKHERJEE
LEADER-167
WEST BENGAL.

2. This award is made under Rule 3(ii) of the rules governing the grant of President 's Fire Service Medals.

BARUN MITRA
Director

No. 111-Pres./2004—The President is pleased, on the occasion of the Independence Day, 2004, to award the President's Home Guard and Civil Defence Medal for Distinguished Service to the undermentioned officers :—

SHRI MD. AKMAL HUSSAIN
COMMANDANT
ASSAM

SHRI BALWAN SINGH
JSO (CD)
DELHI

SMT. R.R. RISBUD
ASSTT. DY. CONTROLLER
MAHARASHTRA

SHRI N.K. PRADHAN
DIV. WARDEN
RAJASTHAN

SHRI B.S. SHEKHAWAT
SUB-INSTRUCTOR
NCDC, NAGPUR

2. These awards are made under Rule 3(ii) of the rules governing the grant of the Presiden's Home Guards and Civil Defence Medal.

BARUN MITRA
Director

No. 112-Pres./2004—The President is pleased, on the occasion of the Independence Day, 2004, to award Home Guards and Civil Defence Medal for Meritorious Service to the undermentioned officers :—

SHRI K.K. SHARMA
SUBEDAR
ASSAM

SHRI G. MALI
PLATOON COMMANDER
ASSAM

SHRI L.S. RAWAT
DIV. WARDEN
DELHI

SHRI B.D. DOGRA
DIV. WARDEN
DELHI

SHRI A.K. MALIK
DIV. WARDEN
DELHI

SHRI K.P. SHARMA
DIV. WARDEN
DELHI

SHRI R.P. SOLANKI
DY. DIV. WARDEN
DELHI

MISS S.V. THAKKAR
DIV. COMMANDER
GUJARAT

SHRI P.B. SALUNKE
STAFF OFFICER
GUJARAT

SHRI J.V. PATEL
DIV. COMMANDER
GUJARAT

SHRI K.N. BARIA
DIV. COMMANDER
GUJARAT

SHRI B.C. THAKOR
COY COMMANDER
GUJARAT

SHRI H.S. THAKAR
PLATOON COMMANDER
GUJARAT

SHRI NARASANNA
COMMANDANT
KARNATAKA

SHRI N.N. PATIL
INSTRUCTOR
KARNATAKA

SHRI KRISHNA
A.S.I. (WIRELESS)
KARNATAKA

SHRI V.B. HOSUR
COY COMMANDER
KARNATAKA

SHRI H.B.R. GOWDA
PLATOON COMMANDER
KARNATAKA

SHRI S.R. BABU
COY COMMANDER
KARNATAKA

SHRI D.L. GAWALI
STAFF OFFICER
MAHARASHTRA

SHRI B.D. ADHANGALE
ASSTT. DY. CONTROLLER
MAHARASHTRA

SHRI N.B. PAGARE
CHIEF WARDEN
MAHARASHTRA

SHRI S.D. PATIL
INSTRUCTOR
MAHARASHTRA

SHRI S.R. LUGADE
INSTRUCTOR & RECCEE OFFICER
MAHARASHTRA

SHRI S. PANDA
CD VOLUNTEER
ORISSA

SHRI A.N. KULOTHUNGAN
PLATOON COMMANDER
TAMIL NADU

SHRI M. GOPALAN
PLATOON COMMANDER
TAMIL NADU

SHRI P.P.J.R. SINGH
PLATOON COMMANDER
TAMIL NADU

SHRI G.K. SETHURAMAN
PLATOON COMMANDER
TAMIL NADU

SHRI B.S. DHANIK
JUNIOR CLERK
UTTARANCHAL

SHRI S.P. GAUTAM
COY COMMANDER
CHHATTISGARH

SHRI M.P. YADAV
PLATOON COMMANDER
CHHATTISGARH

SHRI N.K. BHOI
PLATOON COMMANDER
CHHATTISGARH

SHRI R.N. TIWARI
INSPECTOR (M)
CHHATTISGARH

SHRI Y. KALOO
HAVL. INSTRUCTOR
CHHATTISGARH

SHRI A.P. MISHRA
CONSTABLE
CHHATTISGARH

SHRI R.S. CHAUDHARI
ASSTT. DIRECTOR (RESCUE)
NCDC, NAGPUR

SHRI A.K. BAWANE
GESTETNER OPERATOR
NCDC, NAGPUR

2. These awards are made under Rule 3(ii) of the rules governing the grant of the Home Guards and Civil Defence Medal.

BARUN MITRA
Director

No. 113-Pres./2004—The President is pleased, on the occasion of the Independence Day, 2004 to award the Correctional Service Medal for Meritorious Service to the following prison personnel :—

SHRI G. TAMARAISELVAN
DEPUTY JAILOR
CENTRAL PRISON, MADURAI
TAMIL NADU

SHRI P. RADHAKRISHNAN
ASSISTANT JAILOR
SUB JAIL, TIRUVANAMALLAI
TAMIL NADU

TR. M. RAMASAMY
ASSISTANT JAILOR
CENTRAL PRISON, TRICHY
TAMIL NADU

SHRI M.K. MUNUSAMY
GR.I WARDER
CENTRAL PRISON, VELLORE
TAMIL NADU

TMT. C. RANI
GRADE I WARDER
S.P.W., VELLORE
TAMIL NADU

TR. J. GUNASEKARAN
GRADE II WARDER
CENTRAL PRISON, COIMBATORE
TAMIL NADU

SHRI PRABHU DAYAL VERMA
DY. I.G., RAIPUR
CHHATTISGARH

SHRI JAWAHAR LAL PANDAY
ASSTT. JAILOR
CENTRAL JAIL, AMBIKAPUR
CHHATTISGARH

SHRI DHARM DEO SINGH
HEAD WARDER
CENTRAL JAIL, BILASPUR
CHHATTISGARH

SHRI DEEPAK KUMAR TAMBOLI
WARDER
CENTRAL JAIL, RAIPUR
CHHATTISGARH

SHRI P. NARASIMHA REDDY
ADDL. INSPECTOR GENERAL OF PRISONS
OFFICE OF DG & IG OF PRISONS, HYDERABAD
ANDHRA PRADESH

SHRI KRISHNA PRAKASH SHRIVASTAVA
JAILOR
CHHATARPUR
MADHYA PRADESH

SHRI MRITYUNJAYA SINGH BAGHEL
JAILOR
CENTRAL JAIL, REWA
MADHYA PRADESH

SHRI RADHARAMAN SHRIVASTAVA
DY. JAILOR
REWA
MADHYA PRADESH

SHRI KRISHNA DUTT PANDEY
JAIL WARDER
DISTRICT JAIL, AZAMGARH
UTTAR PRADESH

2. These awards are made under Rule 4(iii) of the Rules governing the grant of Correctional Service Medal for Meritorious Service.

BARUN MITRA
Director

No. 114-Pres/2004-The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI GHULAM AHMAD BHAT,
DIRECTOR,
JAMMU & KASHMIR FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 28.08.2003 at 2255 hrs., the four-storied Greenway Hotel in Srinagar came under fidayeen attack. There was death and destruction all over. Without losing time, Sh. Ghulam Ahmad Bhat, Director, Jammu & Kashmir Fire Service along with his team reached the spot and started fire-fighting and rescue operations. Without caring for his life in the cross-firing, the officer helped in evacuating the hostages and others from the affected building.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 28.08.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 115-Pres/2004-The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI RAJINDER KUMAR HAK,
DEPUTY DIRECTOR,
JAMMU & KASHMIR FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 28.08.2003 at 2255 hrs., the four-storied Greenway Hotel in Srinagar came under fidayeen attack. There was death and destruction all over. Without losing time, Sh. Rajinder Kumar Hak, Deputy Director, Jammu & Kashmir Fire Service along with his team reached the spot and started fire-fighting and rescue operations. Without caring for his life in the cross-firing, the officer helped in evacuating the hostages and others from the affected building.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 28.08.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 116-Pres/2004-The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI LATIEF AHMAD KHAN,
DEPUTY DIRECTOR,
JAMMU & KASHMIR FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 20.12.2002 at 11.44 hrs. terrorists attacked at Army Camp at Tatoo Ground, Batamalloo, Srinagar. Without losing time Shri Latief Ahmad Khan, Deputy Director, Jammu & Kashmir Fire Service along with his team reached the spot. He saw huge flames coming out from the barracks. Without caring for his life in the gun fire and explosions the officer dared to fight fire and helped in evacuation.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 20.12.2002.

(Barun Mitra)
Director

No. 117-Pres/2004-The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI ABDUL GANI WANI,
STATION OFFICER,
JAMMU & KASHMIR FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 28.08.2003 at 2255 hrs., the four-storied Greenway Hotel in Srinagar came under fidayeen attack. There was death and destruction all over. Without losing time, Sh. Abdul Gani Wani, Station Officer, Jammu & Kashmir Fire Service along with his team reached the spot and started fire-fighting and rescue operations. Without caring for his life in the cross-firing, the officer helped in evacuating the hostages and others from the affected building.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 28.08.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 118-Pres/2004-The President is pleased to award the President's Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI MOHAMMAD RAFIQ KHAN,
SUB-OFFICER,
JAMMU & KASHMIR FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 28.08.2003 at 2255 hrs., the four-storied Greenway Hotel in Srinagar came under the fidayeen attack. There was death and destruction all over. Without losing time, Sh. Mohammad Rafiq Khan, Sub-officer, Jammu & Kashmir Fire Service along with his team reached the spot and started fire-fighting and rescue operations. Without caring for his life in the cross-firing, the officer helped in evacuating the hostages and others from the affected building.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, leadership, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of President's Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f.28.08.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 119-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI RAJAN KRISHNAN KOODAM KANDI (POSTHUMOUS)
DRIVER MECHANIC
KERALA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 11.05.2002 at 16.00 hrs. at Orkattery in Kozhikode a well collapsed while digging and four people got buried under the soil. Without losing time Shri Rajan Krishnan Koodam Kandi, Driver Mechanic, Kerala Fire Service along with his team reached the spot and started rescue operations taking all precautions. All of a sudden the well further collapsed and Sh. Rajan with his two colleagues also got buried in the soil. He laid down his life in discharge of his duty.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 11.05.2002.

(Barun Mitra)
Director

No. 120-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI AJITH KUMAR BHASKARA PILLAI (POSTHUMOUS)
FIREMAN - 4956
KERALA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 11.05.2002 at 16.00 hrs. at Orkattery in Kozhikode a well collapsed while digging and four people got buried under the soil. Without losing time Shri Ajith Kukar Bhaskara Pillai, Fireman, Kerala Fire Service along with his team reached the spot and started rescue operations taking all precautions. All of a sudden the well further collapsed and Sh. Kumar with his two colleagues also got buried in the soil. He laid down his life in discharge of his duty.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 11.05.2002.

(Barun Mitra)
Director

No. 121-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SH. JAFFER ABDULLAKUTTY MULLUTHURUTHI
FIREMAN – 4714 (POSTHUMOUS)
KERALA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 11.05.2002 at 16.00 hrs. at Orkattery in Kozhikode a well collapsed while digging and four people got buried under the soil. Without losing time Shri Jaffer Abdullakutty Mulluthuruthi, Fireman, Kerala Fire Service along with his team reached the spot and started rescue operations taking all precautions. All of a sudden the well further collapsed and Shri Jaffer with his two colleagues also got buried in the soil. He laid down his life in discharge of his duty.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 11.05.2002.

(Barun Mitra)
Director

No. 122-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI DHWAJA JAGAT,
LEADING FIREMAN,
ORISSA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 8.11.2003 at 05.45 hrs. Shri Jaiprakash Singh was drowned at Veda Vyasa Ghat while taking holy bath in River Brahmani. Shri Dhwaja Jagat, Leading Fireman, Orissa Fire Service was alert on duty and patrolling the Ghat. He heard the noise "Bachao – Bachao" and ran towards the place. He jumped into the river and with great struggle he saved Shri Jaiprakash Singh.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 08.11.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 123-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI PARSU RAM BARIK,
FIREMAN – 1244,
ORISSA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 06.11.2003 at 09.00 A.M. three persons got trapped in a soak pit at Bhudan Nagar, Penthakota, Puri. On reaching the spot it was found that three persons entered the pit one after the other and fell unconscious due to presence of poisonous gases. Shri Parsu Ram Barik, Fireman, Orissa Fire Service entered the pit knowing well that his colleague is already affected with poisonous gases in the rescue operation and rescued Shri Prafulla Kumar Das with great difficulty.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 06.11.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 124-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI PURNA CHANDRA MOHAPATRA,
FIREMAN –1627,
ORISSA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 06.11.2003 at 09.00 A.M. three persons got trapped in a soak pit at Bhudan Nagar, Penthakota, Puri. On reaching the spot it was found that three persons entered the pit one after the other and fell unconscious due to presence of poisonous gases. Shri Purna Chandra Mohapatra, Fireman, Orissa Fire Service tried to enter the pit by using B.A. set but could not enter due to narrow man hole. He removed the set and entered the pit with great difficulty and brought out Sh. Padma Charan Subudhi through the narrow man hole. Even badly affected with toxic gases he once again dared to enter and finally succeeded in rescuing another person Shri Halu Muduli.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 06.11.2003.

(Barun Mitra)
Director

No. 125-Pres/2004-The President is pleased to award the Fire Service Medal for Gallantry to the undermentioned Officer:

SHRI BHASKAR CHANDRA BARIK
FIREMAN – 447,
ORISSA FIRE SERVICE

Statement of Services for which the decoration has been awarded :-

On 29.04.2003 at 12.30 hrs Smt. Bidyuabati Yadav fell into a well in Baripada. Without loosing time Sh. Bhaskar Chandra Barik, Fireman, Orissa Fire Service along with his team reached the spot and found her fallen in a 50 feet deep well. Immediately Sh. Barik entered into the well with the help of improvised rope ladder and when he reached near her he saw water level just touching her nose and struggling for survival. Endangering his own life he managed to take out Smt. Yadav on his shoulders.

2. He thus, displayed conspicuous gallantry, exemplary courage, professional expertise and devotion to duty of a very high order.

3. This award is made for gallantry under Rule 3(i) of the Rules governing the award of Fire Service Medal for Gallantry and consequently carries with it special allowance admissible under Rule 5(a) w.e.f. 29.04.2003.

(Barun Mitra)
Director

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशन नियंत्रक, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, 2004
PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 2004